International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 110-111

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 110-111
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-12-2022
Accepted: 25-01-2023

प्रवीण कुमार मिश्रा
शोधार्थी छात्र, शोध केन्द्र संस्कृत विभाग, शासकीय टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

डॉ. आर.पी. चतुर्वेदी
शोधनिर्देशिक – प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, शासकीय टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रवीण कुमार मिश्रा
शोधार्थी छात्र, शोध केन्द्र संस्कृत विभाग, शासकीय टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शनः

प्रवीण कुमार मिश्रा, डॉ. आर.पी. चतुर्वेदी

सारांश
दर्शन मानव की शाष्वत सम्पत है। जब से मानव जाति का आरंभ है तभी से दर्शन का भी आरंभ मानना चाहिए। इस संसार का सृष्टा कौन है? संसार की कोई सर्वोपरि नियंत्रण शक्ति अवष्य है। कर्म फल अवष्य ही भोग्य है इस प्रकार की धारणाएँ एवं जिज्ञासाए मानव स्वभाव में अन्तर निहित है। वैदिक ऋषि ने ऐहिक एवं पारलौकिक रहस्यों का साक्षात्कार करते हुए परम सत तत्व को समस्त ब्रम्हाण्ड का आधार कहते हुए मनोभावी आस्तिक दर्षन परम्परा का षिलान्यास किया। उपनिषदों में जिस वेदांत सम्मत दर्शन की प्रतिष्ठा हुई तथा शंकराचार्य ने जिस अद्वैतवात का महान प्रासाद निर्मित किया उसका बीज मंत्र भी ऋग्वेद संहिता में उक्त सत तत्व ही है। इस सत तत्व का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रदर्षित किया जा रहा है।

कूटशब्द : शाष्वत, सृष्टा, नियंत्रण शक्ति, ऐहिक, साक्षात्कार, आस्तिक, उपनिषद, वेदांत, सत तत्व।

प्रस्तावना
भारतीय दर्शन भी एक नया शब्द है। स्वातंत्रयपूर्ण युग के भारतीय दार्शनिकों की सबसे बड़ी उपलब्धि विश्व में भारतीय दर्शन की प्रतिष्ठा करना था। भारतीय दर्शन का संप्रत्यय सर्वथा नवीन है। इसके माध्यम से यह बोध कराया जाता है कि चार्वाक मत, जैनमत, बौद्धमत, वैशेषिक, न्यायमत, सांख्यमत, योग, वेदांत, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि दर्शनों का केवल ''सर्वदर्शन संग्रह के नाम पर संग्रह ही नहीं होता है, अपितु इन दर्शनों से एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रादुर्भूत हुआ है जिसे भारतीय दर्शन कहा जाता है। इस समन्वयात्मक रूप का सर्वप्रथम प्रतिपादन अद्वैतवेदांती आचार्य सुरेश्वर ने किया था। जिन्होंने कहा है–

''यथा यया भवेत्पुंसा व्युत्पत्तिः प्रत्यगात्मनि।
स सैव प्रक्रियेह स्यात्साध्वी सा चानवस्थिति।।[1]

ठनके मत में चार्वाक से लेकर वेदांत तक सभी दर्शनों का तात्पर्य आत्मज्ञान है स्वात्मनं की प्राप्ति है। वास्तव में बौद्ध आदि नास्तिक दर्शनों का मार्ग भी वृित्त परक है। यथार्थ में भारतीय दर्शन जगत और जीवन के निषेध का सिद्धांत है आचार्यों के मत में आधुनिक काल में भारतीय दर्शन जगत और जीवन की सत्यापन का दृष्टिकोण अपनाता है। यही आधुनिक दर्शन की प्राचीन भारतीय दर्शन से विशेषता और विभिन्नता है।[2]

1. बृहदारण्यकोपनिषद् भाराय, वार्तिकम् 114/40
2. इंडियन धॉर एण्ड इट्स डेवलेपमेन्ट, 1935 ई.

आधुनिक भारतीय दर्शन तीन प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है। पहली प्रतिक्रिया पाश्चात्य दर्शन और संस्कृति के प्रति परंपरागत भारतीय दर्शनों की प्रतिक्रिया है। दूसरी प्रतिक्रिया प्राचीन भारतीय दर्शन के प्रति आधुनिक भारतीय दर्शन की प्रतिक्रिया है तीसरी प्रतिक्रिया आधुनिक भारतीय दर्शनों की पारस्परिक प्रतिक्रिया है वास्तव में आधुनिक दर्शन के सभी संस्थापको ने सत्य के अनुसंधान को ही अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया था उनमें सच्ची जिज्ञासा थी वे अपने समय की सभी दार्शनिक और वैज्ञानिक कृतियों से अवगत थे वे अपने समकाकलीन विचारकों की कृतियों से अवगत थे। सत्य के अनुसंधान की उन्होंने अपनी–अपनी प्रणाली निकाली। उनकी बुद्धि उन्हें जिस सिद्धांत की ओर ले जाती थी उसे वे स्वीकार करते थे और उसके अनुसार वे जीवन यापन करते थे। फिर भी आधुनिक दर्शन का प्रधान विषय ज्ञान मीमांसा है।

इस मीमांसा का वे महत्वपूर्ण प्रश्न है– ज्ञान क्या है? ज्ञान का स्रोत क्या है? ज्ञान के प्रामाण्य की कसौटी क्या है? ज्ञान की सीमा क्या है? कितने प्रकार का है? आधुनिक दर्शन के प्रत्येक संस्थापक ने इन प्रश्नों का विमर्श किया।आधुनिक दर्शन में जिस तत्व मीमांसा का वर्णन है वह सृष्टि विज्ञान का निरूपण नहीं है। उसमें केवल तत्व का निरूपण है। इस तत्व निरूपण में तीन तत्व प्रमुख है। ये तत्व :– आत्मा, ईश्वर और बाह्य जगत। उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि हमारे जीवन का भारतीय दर्शन का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। ये दोनों ही एक ही लक्ष्य को सामने रखकर एक ही मार्ग पर साथ–साथ चलने वाले दो पथिक हैं। इन दोनों की सत्ता एक ही कारण पर निर्भर है। इस परम तत्व का सैद्धांतिक रूप हमें दर्शन शास्त्रों में मिलता है। किन्तु व्यवहारिक रूप तो अपने जीवन में मिलता है। और ये दोनों रूप मिलकर हमें उस परम तत्व के पूर्ण रूप का अनुभव कराते हैं। समाज में दर्शनशास्त्र के प्रति यह अवधारणा है कि यह शास्त्र कुछ विशेष विज्ञान जाति समुदाय के लिए मात्र है ऐसा किंचित मात्र भी नहीं है ये उनके लिए है जो जीवन को समझना चाहते हैं प्रायः जो जीवन पर विचार करना चाहते हैं वे साधारण लोगों से कुछ ऊँची कोटि के मनुष्य होते हैं, उनमें उच्च जीवन की कामना भी होती है। कठिन से कठिन और ऊँचे से ऊँचे विषयों पर दर्शन शास्त्र पर विचार होता है इसलिए यह शास्त्र सर्वमान्य के लिए संवेद्य नहीं है।

हम कह सकते हैं कि दर्शनशास्त्र समस्त विश्व को समझने की चेष्टा है। दार्शनिक विश्व के किसी पहलू की उपेक्षा नही कर सकता है। जानने की इच्छा मनुष्य का स्वभाव है, समसत विश्व के बारे में कुछ सिद्धांत स्थिर करने की आकांक्षा भी स्वाभाविक है विश्व ब्रह्मांड में मनुष्य का क्या स्थान है इस प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ मत स्थिर करने की चेष्टा करता है। जो ज्ञान पूर्वक जीवन की क्रियाओं में भाग लेना चाहते हैं वे इस प्रकार का मत बनाने की विशेष चेष्टा करते हैं। परंतु मनुष्य के भविष्य और सृष्टि संचालन के विषय में कोई न कोई मत हर मनुष्य का होता है इसलिए हर मनुष्य दार्शनिक है। प्राणवायु की तरह दर्शनशास्त्र हमारे शरीर के तत्वों में व्याप्त है। दर्शन शास्त्र के अध्ययन से मनुष्य दूसरे विद्वानों के विचारों से परिचित होता है तथा स्वयं वैज्ञानिक ढंग से विचार करना सीखता है। अध्यन की सुगमता के लिए आधुनिक काल के विद्वानों ने इस शास्त्र के शाखाओं में विभक्त कर दिया है प्राचीन काल में ऐसी शाखाएं नहीं थी तथापि प्रत्येक दार्शनिक किसी क्रम से अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन करता था।

इस प्रकार देखा जाय तो भारतीय दर्शन आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सीधे जीवन की संवेदनाओं से प्रेरणा लेता है जीवन में सर्वत्र दुःख और कष्ट व्याप्त है भारत के सहदृय विचारकों के लिए उनसे प्रभावित होना स्वाभाविक था। फलतः हम पाते हैं कि प्रायः सभी भारतीय दर्शनों का आरंभ दुःख के विवेचन से हुआ है। भारतीय दर्शन का दुःखवाद उस वियोगिनी के आंसुओं की तरह है जिसे अपने प्रियतम के आने का दृढ़ विश्वास है परन्तु जो वियोग की अवधि निश्चित रूप से नहीं जानती। संसार अपने साधारण रूप में दुःखमय है किन्तु दुःख ही जीवन की अंतिम नियति नहीं है। इस दुःख का एक कारण है, इनके निवारण और आनंद की प्राप्ति का एक साधन है। अज्ञान समस्त दुःखों का मूल है। ज्ञान द्वारा आनंद की प्राप्ति की जा सकती है। आनंदमय आदर्श और साधना द्वारा उसकी प्राप्ति में भारतीय दर्शन का अखंड विश्वास है अतः दुःख की भावना में जन्म लेने पर भी उसे आशावादी होने का श्रेय देना होगा। लौकिक क्षेत्रों में भी प्राचीन भारतीयों ने जैसे विशाल साम्राज्यों तथा अन्य विभूतियों का निर्माण किया उन्हें देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें प्रयत्नशीलता, कर्मण्यता, तथा जीवनोचित उमंग का उत्साह की कोई कमी थी। इस दुःखमय संसार से मुक्ति को सभी दर्शन अपना परम लक्ष्य मानते हैं। दुःख की भावना से द्रवित होकर भारतीय विचार सदा इस दुःखमय संसार और जन्म परंपरा से मुक्ति के उपाय खोजते रहे हैं। सभी ने मोक्ष को जीवन का परमार्थ और निःश्रेयस माना है।

संदर्भ

1. भारतीय दर्शन – डॉ. उमेश मिश्रा
2. स्मकालीन भारतीय दर्शन – डॉ. लक्ष्मी सक्सेना
3. भारतीय दर्शन की चिंतनधारा – राममूर्ति शर्मा
4. सांख्य दर्शन – आचार्य उदयवीर शास्त्री
5. वेदांत दर्शन – उदयवीर शास्त्री
6. षड्दर्शन समुच्चय – डॉ. महेन्द्र कुमार जैन
7. दर्शन तत्व विमर्श – डॉ. नवला
8. न्यायदर्शनम् – दर्शन योग कार्मार्थ ट्रस्ट